اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **इन्सानिय्यत की सब से बड़ी ख़िदमत**
सिने त़बाअ़त : रजबुल मुरज्जब **1444** हि., फ़रवरी **2023** ई.
ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

इन्सानिय्यत की सब से बड़ी ख़िदमत

येह रिसाला **(इन्सानिय्यत की सब से बड़ी ख़िदमत)** शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

इन्सानिय्यत की सब से बड़ी ख़िदमत[1]

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

किसी बुज़ुर्ग ने एक शख़्स को इन्तिक़ाल के बा'द ख़्वाब में देख कर पुछा : مَافَعَلَ اللّٰهُ بِكَ ? या'नी **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? कहा : **अल्लाह** पाक ने मुझे बख़्श दिया। पुछा : किस सबब से ? बोला : मैं एक मुह़द्दिस साहि़ब के यहां ह़दीसे पाक लिखा करता था, उन्हों ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ा तो मैं ने बुलन्द आवाज़ से दुरूदे पाक पढ़ा नीज़ ह़ाज़िरीन ने सुना तो उन्हों ने भी दुरूदे पाक पढ़ा तो **अल्लाह** पाक ने इस की बरकत से हम सब को बख़्श दिया है। (القول البدیع، ص254)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ना फ़रमानों से लोग नफ़रत करते हैं

प्यारे प्यारे इस्लामी ! **गुनाह** करना दोनों जहानों के लिये बाइ़से नुक़्सान व ख़ुसरान है और गुनहगारों के लिये लोगों के दिलों से भी एह़तिराम निकल जाता है, इस ज़िम्न में **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की किताब, **''जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल''** (853

1... येह मज़्मून ''नेकी की दा'वत'' सफ़ह़ा 302 ता 310, 312 ता 314 और 332 ता 340 से लिया गया है।

सफ़हात) जिल्द अव्वल सफ़हा 66 ता 67 पर "**नेकी की दा'वत**" के मदनी फूलों की ख़ुश्बूओं से महकती 6 रिवायात मुलाहज़ा फ़रमाइये : ﴾1﴿ उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ को तह़रीर भिजवाई : **اَمَّـابَعد** (या'नी ह़म्दो सलात के बा'द) जब बन्दा **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी का कोई अ़मल करता है तो उस की ता'रीफ़ करने वाले लोग उस की मज़म्मत करने लगते हैं। (کتاب الزہد للامام احمد، ص186، حدیث:917) ﴾2﴿ ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ फ़रमाते हैं : इस बात से डरो कि मुअमिनीन के दिल तुम से नफ़रत करने लगें और तुम्हें इस का शुऊ़र (पता) भी न हो (کتاب الزہد لابی داود، ص205، حدیث:229) ﴾3﴿ ह़ज़रते फ़ुज़ैल رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : जो बन्दा तन्हाई में **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी करता है **अल्लाह** पाक मुअमिनीन के दिलों में उस के लिये अपनी नाराज़ी इस त़रह़ डाल देता है कि उसे इस का शुऊ़र (पता) भी नहीं होता। ﴾4﴿ इमाम मुह़म्मद बिन सीरीन رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ जब मक़्रूज़ हुए और उन्हें क़र्ज़ के सबब शदीद ग़म लाह़िक़ हुवा तो फ़रमाया : मैं अपने इस ग़म का सबब चालीस साल पहले सरज़द होने वाले एक **गुनाह** को समझता हूं। (حلیۃ الاولیاء، 2/307، رقم:2334) ﴾5﴿ ह़ज़रते सुलैमान **तैमी** رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : आदमी पोशीदा त़ौर पर एक **गुनाह** करता है तो इस की वज्ह से उस पर ज़िल्लत त़ारी हो जाती है (کتاب التوبۃ مع موسوعۃ ابن ابی الدنیا، 3/424، حدیث:95) ﴾6﴿ ह़ज़रते यह़या बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ फ़रमाते हैं : मुझे उस आ़क़िल पर तअ़ज्जुब है जो अपनी दुआ़

में तो येह कहता है कि **या अल्लाह !** मुझे मुसीबत में मुब्तला कर के मेरे दुश्मनों को ख़ुश न करना, ह़ालां कि दुश्मन को अपनी मुसीबत पर ख़ुश करने के अस्बाब वोह ख़ुद ही पैदा करता है ! आप رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ से पूछा गया : वोह कैसे ? तो जवाबन फ़रमाया : वोह **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी करता है और इस त़रह़ क़ियामत के दिन अपने दुश्मनों को ख़ुश करेगा। (الزواجر عن اقتراف الکبائر، 1/29، 30)

यहां भी दे इ़ज़्ज़त, वहां भी दे इ़ज़्ज़त इलाही ! पए मुस्त़फ़ा जाने रह़मत

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

इन्सानिय्यत की सब से बड़ी ख़िदमत कौन सी है ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! लोगों को **नेकी की दा'वत** देना और इन को गुनाहों से बचाना भी यक़ीनन बहुत बड़ा नफ़्अ़ पहुंचाने वाला काम है, बीमारी, बे रोज़गारी, क़र्ज़दारी वग़ैरा परेशानियों के मवाक़ेअ़ पर प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुख्यारी उम्मत की ह़ाजत बरआरी भी बेशक नेकोकारी है और उस में जन्नत की ह़क़दारी है मगर इन्सानिय्यत की सब से बड़ी ख़िदमत येही है कि उस को जहन्नम से बचाने की तदबीर की जाए। येह इन्सान को पहुंचाया जाने वाला सब से बड़ा नफ़्अ़ है। मन्क़ूल है : दो ख़स्लतें ऐसी हैं कि उन से अफ़्ज़ल कोई ख़स्लत नहीं ﴿1﴾ **अल्लाह** पाक पर ईमान लाना ﴿2﴾ मुसल्मानों को नफ़्अ़ पहुंचाना और दो ख़स्लतें ऐसी हैं कि उन से ज़ियादा बुरी कोई ख़स्लत नहीं ﴿1﴾ **अल्लाह** पाक के साथ किसी को शरीक ठहराना ﴿2﴾ मुसल्मानों को तक्लीफ़ देना। (المنبہات، ص3)

करूं या ख़ुदा मोमिनों की मैं ख़िदमत न पहुंचे किसी को भी मुझ से अज़िय्यत

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

दुन्या भर से बेहतर

रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से इर्शाद फ़रमाया : ऐ अ़ली ! **अल्लाह** पाक तुम्हारे ज़रीए़ किसी शख़्स को राहे रास्त पर ले आए तो येह तुम्हारे लिये उन तमाम चीज़ों से बेहतर है जिन पर सूरज तुलूअ़ होता है। (या'नी दुन्या की तमाम चीज़ों से बेहतर है) (معجم کبیر، 1/332، حدیث:994)

सुर्ख़ ऊंटों से बेहतर

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ख़ूब ख़ूब नेकी की दा'वत की धूमें मचाते रहिये, आप की **नेकी की दा'वत** से अगर सिर्फ़ एक फ़र्द ही इ़श्क़े रसूल का जाम ग़टग़टा गया, राहे हिदायत पा गया, उसे **दा'वते इस्लामी** का दीनी माह़ोल भा गया, वोह सुन्नत की शाहराह पर आ गया, नमाज़ों की लज़्ज़तें पा गया, अपने आप को नेक बन्दों में खपा गया तो اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم आप का भी बेड़ा पार हो जाएगा। एक और रिवायत में है : **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर **अल्लाह** पाक तुम्हारे ज़रीए़ किसी एक शख़्स को हिदायत अ़ता फ़रमाए तो येह तुम्हारे लिये इस से अच्छा है कि तुम्हारे पास **सुर्ख़ ऊंट** हों। (مسلم، ص1311، حدیث:2406)

सुर्ख़ ऊंटों से क्या मुराद है ?

ह़ज़रते अ़ल्लामा यह़्या बिन शरफ़ नववी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस ह़दीसे नबवी की शर्ह़ में लिखते हैं : **सुर्ख़ ऊंट** अहले अ़रब का बेश क़ीमत माल

समझा जाता था, इस लिये ज़र्बुल मसल (या'नी कहावत) के तौर पर सुर्ख़ ऊंटों का ज़िक्र किया गया। उख़्रवी उमूर को दुन्यवी चीज़ों से तश्बीह (या'नी मिसाल) देना सिर्फ़ समझाने के लिये है, वरना ह़क़ीक़त येही है कि हमेशा बाक़ी रहने वाली आख़िरत (की ने'मत) का एक ज़र्रा भी दुन्या और इस जैसी जितनी दुन्याएं तसव्वुर की जा सकें, उन सब से बेहतर है। (شرح مسلم للنووی، 15/178)

मुबल्लिग़ बनूं काश ! मैं सुन्नतों का सदा दीं की ख़िदमत करूं येह दुआ है

(वसाइले बख़्शिश, स. 332)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

12 माह मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत की बरकत से "कैन्सर" चला गया !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! नेकी की दा'वत का जज़्बा पाने, सुन्नतों पर अ़मल करने, नेकियों का सवाब कमाने, दिल में इ़श्क़े रसूल की शम्अ़ जलाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के दीनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ते रहिये, नमाज़ों की पाबन्दी जारी रखिये, सुन्नतों पर अ़मल करते रहिये, "नेक आ'माल" के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये हर रोज़ "जाएज़ा" कर के नेक आ'माल का रिसाला पुर करते रहिये और हर माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये और अपने इस **दीनी मक़्सद "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है"** के ह़ुसूल की ख़ातिर पाबन्दी से हर माह

कम अज़ कम तीन दिन के सुन्नतें सीखने सिखाने के **मदनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये। आइये ! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये आप को एक **मदनी बहार** सुनाऊं, एक इस्लामी भाई की अम्मीजान तक़रीबन तीन साल से **कैन्सर** के मरज़ में मुब्तला थीं, हर दो माह बा'द उन के टेस्ट होते थे। अम्मीजान के बढ़ते हुए मरज़ और रोज़ रोज़ डॉक्टरों के पास चक्कर लगाने की परेशानी देखी नहीं जाती थी। ऐसे में रमज़ानुल मुबारक (1430 हि.) की तशरीफ़ आवरी हुई। इन इस्लामी भाई ने आ़शिक़ाने रसूल के साथ ए'तिकाफ़ करने की सआ़दत ह़ासिल की, वहां अपनी अम्मीजान के लिये ख़ूब दुआ़ की और दीनी माह़ोल की बरकत से आ़शिक़ाने रसूल के साथ 12 माह मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत कर ली। 21 रमज़ानुल मुबारक को वालिदा के टेस्ट हुए और दो दिन बा'द जब रिपोर्टस मिलीं तो पढ़ कर उन की ख़ुशी की इन्तिहा न रही क्यूं कि रिपोर्टस बिल्कुल नॉर्मल थीं और तीन साल से कैन्सर का जो मरज़ अम्मीजान की जान नहीं छोड़ रहा था, اَلْحَمْدُلِلّٰه उन का हुस्ने ज़न है कि मदनी क़ाफ़िले में 12 माह सफ़र की निय्यत करने की बरकत से ख़त्म हो चुका था।

कैन्सर और बीमारी के लिये मदनी नुस्ख़ा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! कैन्सर जो कि डॉक्टरों के नज़दीक ला इ़लाज बीमारी मानी जाती है, **अल्लाह** पाक की रह़मत से दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल में उस का इ़लाज हो गया। आइये ! कैन्सर, शूगर, T.B., दिल और गुर्दे के अमराज़ बल्कि हर बीमारी के इ़लाज के लिये एक **मदनी नुस्ख़ा** सुनते हैं। ह़ज़रते वह्ब बिन मुनब्बेह

رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की किताब में है कि सह़्र ज़दा (या'नी जिस पर किसी ने जादू करवाया हो वोह) शख़्स, बेरी (या'नी बेर के दरख़्त) के 7 सब्ज़ पत्ते ले कर उन्हें दो पथ्थरों के दरमियान (मसलन पथ्थर की सिल पर रख कर दूसरे पथ्थर से) कूट ले, फिर उन्हें पानी में मिला कर आयतुल कुर्सी और **चार कुल** पढ़ कर दम करे, फिर उस पानी से 3 घूंट पी कर बक़िय्या से गुस्ल करे तो اِنْ شَآءَ اللهُ الْكَرِيْم उस से बीमारी दूर हो जाएगी। येह अ़मल उस शख़्स के लिये (भी) इन्तिहाई मुफ़ीद है जिसे (जादू के ज़रीए) बीवी से रोक दिया गया हो। (مصنف عبد الرزاق، 10/77، رقم: 19933)

क़िस्मत में लाख पेच हों सो बल हज़ार कज   येह सारी गुथ्थी इक तेरी सीधी नज़र की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 227)

शर्हे कलामे रज़ा : इस शे'र में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क़िस्मत में चाहे कितनी ही उल्झनें और परेशानियां लिखी हों, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बस लुत़्फ़ो करम की एक सीधी नज़र फ़रमा दीजिये اِنْ شَآءَ اللهُ الْكَرِيْم तक़्दीर की सारी गुथ्थियां खुल और पेचीदगियां ह़ल हो जाएंगी।

ताजे शाही का मैं नहीं त़ालिब   कर दो रह़मत की इक नज़र आक़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 350)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

गुनाहों के 6 इलाज

हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की "नेकी की दा'वत" देने का एक अपना अन्दाज़ हुवा करता था चुनान्चे ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमते सरापा अ़ज़्मत में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा और

अ़र्ज़ की : या सय्यिदी ! मुझ से बहुत गुनाह सरज़द होते हैं, बराए करम ! **गुनाहों का इलाज** तज्वीज़ फ़रमा दीजिये । आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने **पहली नसीह़त** करते हुए फ़रमाया : जब गुनाह करने का पक्का इरादा हो जाए तो **अल्लाह** पाक का रिज़्क़ खाना छोड़ दो । उस शख़्स ने ह़ैरत से अ़र्ज़ की : ह़ज़रत ! आप कैसी नसीह़त फ़रमा रहे हैं ! येह कैसे हो सकता है ? जब कि रज़्ज़ाक़ वोही है, तो मैं उस की रोज़ी छोड़ कर भला किस की रोज़ी खाऊंगा ! फ़रमाया : देखो, कितनी बुरी बात है कि जिस परवर दगार की रोज़ी खाओ उसी की ना फ़रमानी भी करो ! फिर **दूसरी नसीह़त** फ़रमाई : जब भी गुनाह का इरादा हो जाए तो **अल्लाह** पाक के मुल्क से बाहर निकल जाओ । अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! येह भी कैसे हो सकता है ! मश्रिक़, मग़रिब, शिमाल, जुनूब, दाएं, बाएं, ऊपर, नीचे अल ग़रज़ जिधर जाऊं उधर **अल्लाह** पाक ही का मुल्क पाऊं, **अल्लाह** पाक के मुल्क से बाहर किस त़रह़ जाऊं ! फ़रमाया : देखो ! कितनी बुरी बात है कि **अल्लाह** पाक के मुल्क में भी रहो और फिर उस की ना फ़रमानी भी करो । **तीसरी नसीह़त** येह इर्शाद फ़रमाई : जब पुख़्ता इरादा हो जाए कि बस अब गुनाह कर ही डालना है तो अपने आप को इतना छुपा लो कि **अल्लाह** पाक देख न सके । अ़र्ज़ की : **हुज़ूर !** येह क्यूंकर मुम्किन है कि **अल्लाह** पाक मुझे देख न सके, वोह तो दिलों के अह़वाल से भी बा ख़बर है । फ़रमाया : देखो ! कितनी बुरी बात है कि तुम **अल्लाह** पाक को समीअ़ व बसीर (या'नी सुनने वाला और देखने वाला) भी तस्लीम करते हो और येह भी यक़ीन के साथ कह रहे हो कि हर लम्ह़े मुझे **अल्लाह पाक देख रहा है** मगर फिर भी गुनाह किये जा रहे हो । **चौथी नसीह़त**

येह इर्शाद फ़रमाई : जब मलकुल मौत ह़ज़रते इ़ज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام तुम्हारी रूह़ क़ब्ज़ करने के लिये तशरीफ़ लाएं तो उन से कह देना, थोड़ी सी मोहलत दे दीजिये ताकि मैं तौबा कर लूं। अ़र्ज़ की : **हुज़ूर !** मेरी क्या औक़ात और मेरी सुने कौन ? मौत का वक़्त मुक़र्रर है और मुझे एक लम्ह़े भी मोहलत नहीं मिल सकेगी फ़ौरन मेरी रूह़ क़ब्ज़ कर ली जाएगी। फ़रमाया : जब तुम येह जानते हो कि मैं बे इख़्तियार हूं और तौबा की मोहलत ह़ासिल नहीं कर सकता तो फ़िलह़ाल मिले हुए लम्ह़ात को ग़नीमत जानते हुए **मलकुल मौत** عَلَيْهِ السَّلَام की तशरीफ़ आवरी से पहले पहले तौबा क्यूं नहीं कर लेते ? फिर आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने **पांचवीं नसीह़त** येह फ़रमाई : जब तुम्हारी मौत वाक़ेअ़ हो जाए और क़ब्र में **मुन्कर नकीर** तशरीफ़ ले आएं तो उन को क़ब्र से हटा देना। अ़र्ज़ की : **सरकार !** येह क्या फ़रमा रहे हैं ! मैं उन्हें कैसे हटा सकूंगा ! मुझ में इतनी त़ाक़त कहां ! आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम **नकीरैन** को हटा नहीं सकते तो उन के सुवालात के जवाबात की तय्यारी अभी से क्यूं नहीं कर लेते ? छटी और **आख़िरी नसीह़त** करते हुए फ़रमाया : अगर क़ियामत के दिन तुम्हें जहन्नम का हुक्म सुनाया जाए तो कह देना : "नहीं जाता।" अ़र्ज़ की : **हुज़ूर !** वहां तो गुनहगारों को घसीट कर दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा। फ़रमाया : जब तुम **अल्लाह** पाक की रोज़ी खाने से भी बाज़ नहीं आ सकते उस के मुल्क से बाहर भी नहीं निकल सकते, उस से नज़र भी नहीं बचा सकते, **मुन्कर नकीर** को भी नहीं हटा सकते और अगर जहन्नम का हुक्म सुना दिया जाए तो उसे भी नहीं टाल सकते तो फिर

गुनाह करना ही क्यूं नहीं छोड़ देते ! उस शख़्स पर **हज़रते इब्राहीम बिन अदहम** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के तज्वीज़ कर्दा **गुनाहों के इलाज** के इन छे नसीहत आमोज़ **मदनी फूलों** की ख़ुश्बूओं ने बहुत असर किया, ज़ारो क़िता़र रोते हुए उस ने अपने तमाम गुनाहों से सच्ची **तौबा** कर ली और मरते दम तक तौबा पर क़ाइम रहा । (تذکرۃ الاولیاء، ص100 ملخصا)

अल्लाह देख रहा है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा **हिकायत** में तज्वीज़ कर्दा **गुनाहों के 6 इलाज** निहायत मुअस्सिर हैं, गुनाह का इरादा होने पर अगर इन को पेशे नज़र रख लिया जाए तो गुनाहों से बचने का बड़ा ज़बर दस्त सामान हो सकता है। यक़ीनन सिर्फ़ येही बात अगर ज़ेह्न में रासिख़ (या'नी पक्की) हो जाए कि "**अल्लाह देख रहा है**" तो बन्दा गुनाहों के क़रीब भी न फटके। **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** के मत़्बूआ़ रिसाले, "**गुनाहों का इलाज**" सफ़ह़ा 12 ता 14 पर है : वाक़ेई अगर कोई अपने अन्दर येह एह़सास उजागर कर ले कि गुनाह करते वक़्त मेरा पालने वाला "**परवर दगार मुझे देख रहा है**" झूट बोलते वक़्त फ़ौरन ख़याल आ जाए कि मैं झूट बोल कर बन्दे को तो धोका दे रहा हूं और येह बेचारा मुझे सच्चा भी जान रहा है मगर **अल्लाह पाक मुझे देख रहा है** , जी हां, **अल्लाह** पाक पर हर एक की निय्यत आशकार (या'नी ज़ाहिर) है । **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** के तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, "**कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" सफ़ह़ा 866 पर पारह 24 **सूरतुल मुअमिन** आयत नम्बर 19 में है :

يَعۡلَمُ خَآئِنَةَ الۡاَعۡیُنِ وَمَا تُخۡفِی الصُّدُوۡرُ ﴿۱۹﴾

(پارہ24،المؤمن:19)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** जानता है चोरी छुपे की निगाह और जो कुछ सीनों में छुपा है।

हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه इस आयत के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी निगाहों की ख़ियानत और चोरी ना मह़रम को देखना और मम्नूआ़त पर नज़र डालना। **अल्लाह** पाक के इ़ल्म में हैं। (तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान स. 866)

नफ़्सियाती असर

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा जाए तो इन्सान को इन्सान से बहुत डर लगता है। मसलन वालिदैन या असातिज़ए किराम के सामने गाली देते हुए डरते हैं मगर अफ़्सोस **अल्लाह** पाक से कमा ह़क़्क़ुहू (या'नी जैसा कि उस का ह़क़ है) नहीं डरते, अगर कोई रो'बदार शख़्स सामने मौजूद हो तो उस से इतना डरते हैं कि आवाज़ तक नहीं निकलती, उस से आ़जिज़ी के साथ बोलने सुनने की कोशिश करते हैं। ऐ काश ! **अल्लाह** पाक का ख़ौफ़ हमारे दिलों में जा गुज़ीं हो जाए, हर वक़्त उसी के ख़ौफ़ का ग़लबा रहे और हम जिस त़रह़ लोगों के सामने बुरे काम करना पसन्द नहीं करते उसी त़रह़ तन्हाई में भी बचते रहें। ऐ काश ! सद करोड़ काश ! हमारे ज़ेहन में हर वक़्त येह बात रासिख़ रहे कि **अल्लाह पाक देख रहा है** और यूं हम अपने **गुनाहों का इलाज** करने में काम्याब हो जाएं।

छुप के लोगों से किये जिस के गुनाह वोह ख़बरदार है क्या होना है

अरे ओ मुजरिमे बे परवाह देख सर पे तलवार है क्या होना है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 167)

शर्हे कलामे रज़ा : आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इन अश्आ़र के अन्दर एक मख़्सूस अन्दाज़ में "**नेकी की दा'वत**" इर्शाद फ़रमाई है चुनान्चे इन अश्आ़र का मफ़्हूम है : ﴿1﴾ ऐ गुनाह करने वाले ! तूने लोगों से तो अपने गुनाह छुपा लिये मगर येह भूल गया कि जिस परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानियां की हैं वोह तेरे इन कारनामों से वाक़िफ़ है। अब ग़ौर कर महशर में तेरा क्या होगा ! ﴿2﴾ ऐ ग़फ़्लत शिआ़र मुजरिम ! होश कर ! तेरे सर पर हर वक़्त मौत की तलवार लटक रही है, ख़ुदा से डर ! गुनाहों से कनारा कर, अगर तू ला परवाही से गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ार कर मर गया तो तेरा क्या बनेगा !

ज़िन्दगी की शाम ढलती जा रही है हाए नफ़्स ! गर्म रोज़ो शब गुनाहों का ही बस बाज़ार है
मुजरिमों के वासिते दोज़ख़ भी शो'लाबार है हर गुनह क़स्दन किया है इस का भी इक़रार है
बन्दए बदकार हूं बेहद ज़लीलो ख़्वार हूं मग़्फ़िरत फ़रमा इलाही ! तू बड़ा ग़फ़्फ़ार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 428, 429)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

नेकी की दा'वत के पांच मदनी फूल

एक तवील हदीसे पाक में येह भी है : ह़ज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللهُ عَنْه ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते मुसा عَلَيْهِ السَّلَام के सह़ीफ़ों में क्या था ? **फ़रमाया :** उन सब में इ़ब्रत की बातें थीं कि ﴿1﴾ तअ़ज्जुब है उस शख़्स पर जो मौत पर यक़ीन रखने के बा वुजूद भी ख़ुश होता है ﴿2﴾ तअ़ज्जुब है उस पर जो जहन्नम का यक़ीन होने के बा वुजूद भी हंसता है ﴿3﴾ तअ़ज्जुब है उस पर जो तक़दीर पर यक़ीन रखने के बा वुजूद भी (दुन्या के लिये) ख़ुद को थकाता है ﴿4﴾

तअ़ज्जुब है उस पर जो दुन्या और उस की तब्दीलियों को देखता है फिर भी उस पर मुत्मइन हो जाता है ﴾5﴿ तअ़ज्जुब है उस पर जिसे यक़ीन है कि कल उसे हि़साब देना है फिर भी (नेक) आ'मल नहीं करता।

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، 1/288، حدیث:362)

इन्फ़िरादी कोशिश ''नेकी की दा'वत'' की रूह़ है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! नेकी की दा'वत की रूह़ ''इन्फ़िरादी कोशिश'' है। जिस मुसल्मान पर नेकी की दा'वत पेश करने के लिये इन्फ़िरादी कोशिश करनी हो उस के लिये येह ज़ेह्न बनाना चाहिये कि मैं जिस से मिलने लगा हूं वोह एक **मुसल्मान** है, मुसल्मान चाहे कितना ही गुनहगार हो मगर दौलते ईमान से मुशर्रफ़ होने की वज्ह से उस का अपना एक मक़ाम है और मैं ने मिलना भी **अल्लाह** पाक के दीन की सर बुलन्दी और आख़िरत की बेहतरी के लिये है, इस निय्यत से मेरा मिलना इ़बादत का दरजा रखता है, अगर इन निय्यतों के साथ मुलाक़ात करेंगे तो इस मौक़अ़ पर اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم रह़मतों का नुज़ूल होगा और बरकतें मिलेंगी। एक ख़ास मदनी फूल येह भी ज़ेह्न में रहे कि उस के उ़यूब की टटोल में मत पड़िये, उस की अ़क़्ल से मा वरा (या'नी उस की समझ में न आए ऐसी) बात मत कीजिये और गहरे मसाइल मत छेड़िये।

''या ख़ुदा मुझे नरमी दे'' के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से इन्फ़िरादी कोशिश की 15 निय्यतें

इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए ह़स्बे ह़ाल या'नी मौक़अ़ की मुनासबत से बे शुमार **निय्यतें** की जा सकती हैं, उन में से 15 पेश की जाती हैं :

﴾1﴿ **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये नेकी की दा'वत देने के लिये इन्फ़िरादी कोशिश करता हूं ﴾2﴿ सलाम व जवाबे सलाम के बा'द गर्म जोशी से हाथ मिलाऊंगा ﴾3﴿ صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! कह कर दुरूद शरीफ़ पढ़ाऊंगा और पढ़ूंगा ﴾4﴿ चूंकि सामने वाले के चेहरे पर नज़रें गाड़ कर गुफ़्तगू करना सुन्नत नहीं लिहाज़ा हत्तल इम्कान नीची निगाहें किये बातचीत करूंगा (नीची निगाहें कर के इन्फ़िरादी कोशिश करने से नेकी की दा'वत का फ़ाएदा اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم कई गुना बढ़ जाएगा) ﴾5﴿ **सुन्नत** पर अ़मल की निय्यत से मुस्करा कर बात करूंगा ﴾6﴿ तन्ज़ बाज़ी और ग़ैर सन्जीदा गुफ़्तगू से बचूंगा ﴾7﴿ सामने वाले की नफ़्सिय्यात के मुताबिक़ गुफ़्तगू की कोशिश करूंगा ﴾8﴿ गहरे मसाइल छेड़ कर उस को तश्वीश में नहीं डालूंगा ﴾9﴿ बिला ज़रूरत मौजूदा सियासत और दहशत गर्दी वग़ैरा के तज़्किरे नहीं करूंगा ﴾10 ता 12﴿ सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत, मदनी क़ाफ़िले में सफ़र और नेक आ'माल पर अ़मल का ज़ेहन देने की सई करूंगा ﴾13﴿ नए इस्लामी भाई को एक दम से दाढ़ी रखने और इ़मामा शरीफ़ पहनने की तल्क़ीन के बजाए नमाज़ की फ़ज़ीलत वग़ैरा बताऊंगा। (हां जिस से बात कर रहे हैं वोह "शेव्ड" है और ज़न्ने ग़ालिब है कि इस को दाढ़ी बढ़ाने का कहेंगे तो मान जाएगा तब तो उस को दाढ़ी मुंडाने से मन्अ़ करना वाजिब हो जाएगा, मगर उ़मूमन नए इस्लामी भाई पर "ज़न्ने ग़ालिब" होना दुश्वार होता है, अ़मल के जज़्बे की कमी का दौर है, नए इस्लामी भाई को दाढ़ी रखने का इसरार करने पर हो सकता है आयिन्दा आप के सामने आने ही से कतराए) ﴾14﴿ सामने वाले का लहजा अगर ना

गवार या तुन्ज़ भरा हुवा तो समझ जाने के बा वुजूद इस का उस पर इज़्हार किये बिग़ैर सब्र और नरमी के साथ आ़जिज़ाना अन्दाज़ में बात जारी रखूंगा। ﴾15﴿ अगर इन्फ़िरादी कोशिश का अच्छा नतीजा सामने आया तो **अल्लाह** पाक का करम समझूंगा और शुक्रे इलाही बजा लाऊंगा, और अगर कोई ना ख़ुश गवार बात पेश आई तो सामने वाले को सख़्त दिल वग़ैरा समझने के बजाए इसे अपने इख़्लास की कमी तसव्वुर करूंगा।

मुबल्लिग़ के लिये अहम तरीन मदनी फूल

हौसला बड़ा रखना चाहिये, नाकामी की तो कोई वज्ह ही नहीं क्यूं कि अच्छी निय्यत की सूरत में नेकी की दा'वत पर मुश्तमिल इन्फ़िरादी कोशिश करने वाला सवाबे आख़िरत का हक़दार तो हो ही गया। हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं : किसी बुज़ुर्ग ने अपने फ़रज़न्द को नसीह़त का मदनी फूल इनायत करते हुए फ़रमाया : "नेकी की दा'वत" देने वाले को चाहिये कि अपने आप को सब्र का ख़ूगर (या'नी आ़दी) बनाए और **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से नेकी की दा'वत के मिलने वाले सवाब पर यक़ीन रखे। जिस को सवाब का कामिल यक़ीन हो उस को इस मुबारक काम में तक्लीफ़ महसूस नहीं होती। (احیاء العلوم، 2/410)

मैं नेकी की दा'वत की धूमें मचाऊं बदी से बचूं और सब को बचाऊं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

मुसल्सल इन्फ़िरादी कोशिश का फल

एक शख़्स की नेकी की राह पर गामज़न होने से क़ब्ल ह़ालत ना

गुफ़्ता बेह थी, सर ता पा गुनाहों से आलूद थे। लोगों से झगड़ा वग़ैरा करने के लिये उन्हों ने एक अलाहदा ग्रूप बना रखा था, उन की बद कलामी और फ़ोहूश गोई से स्कूल के तलबा, असातिज़ा और हेड मास्टर वग़ैरा सभी तंग थे, राह चलते बद निगाही करना उन का मा'मूल था, न सिर्फ़ इश्के़ मजाज़ी में गरिफ़्तार बल्कि مَعَاذَاللہ ऐसी ना ज़ैबा हरकात करते जिन्हें बयान नहीं किया जा सकता। शर्ई मा'लूमात से ना बलद (या'नी ना वाक़िफ़) होने की वज्ह से इतना भी मा'लूम न था कि फ़र्ज़ ग़ुस्ल किस तरह उतरता है, रमज़ानुल मुबारक में बड़े बड़े गुनहगार भी अपने गुनाहों का सिल्सिला ख़त्म कर के **अल्लाह** पाक की इबादत में मसरूफ़ हो जाते हैं मगर अफ़्सोस सद अफ़्सोस ! वोह रमज़ानुल मुबारक में भी बाज़ारों की ज़ीनत बने रहते और बद निगाही के ज़रीए अपने क़ल्बे सियाह की तस्कीन का सामान करते, ईदें पार्कों में और 12 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ का मुबारक दिन बाज़ारों और मुख़्तलिफ़ तफ़रीह गाहों में गुज़ारते, जब बसंत आती तो सारी सारी रात अपने ग्रूप के साथ बसंत मनाने वालों की तरह ज़र्द लिबास में मल्बूस नाच रंग की महाफ़िल में मश्ग़ूल रहते। **अल्लाह** पाक की याद से ग़फ़्लत का येह आलम था कि महीनों मस्जिद का रुख़ न करते। उन के वालिद साहिब एक नमाज़ी और परहेज़गार शख़्स थे, वोह लाख पन्दो नसीहत करते मगर उन के कान पर जूं तक न रेंगती, गुनाहों की नुहूसत इतनी ज़ियादा थी कि जो कोई उन की सोहबत इख़्तियार करता वोह भी पैकरे गुनाह बन जाता। अपने इन्हीं काले करतूतों के सबब वोह सब की नज़रों में क़ाबिले नफ़रत बन कर रह गए थे।

आख़िर कार काया कुछ इस त़रह़ पल्टी कि एक रोज़ मस्जिद के क़रीब से गुज़रते हुए एक आ़शिक़े रसूल ने उन्हें **नमाज़** की दा'वत दी, इन्कार करने पर उस ने इसरार किया और हाथ पकड़ कर **महब्बत** से मस्जिद में ले गए। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो एक इस्लामी भाई ने दर्स शुरूअ़ किया, येह भी उस में शरीक हो गए, दर्स के दौरान उन्हों ने **अल्लाह** पाक की रह़मत व मग़्फ़िरत के मुतअ़ल्लिक़ ह़िकायात सुनीं तो कुछ ह़ौसला मिला, दर्स के बा'द जब इस्लामी भाइयों ने इन्तिहाई मह़ब्बत भरे अन्दाज़ में नेकी की दा'वत दी तो उन के दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हो गई, क्यूं कि अ़क़्ल व शुऊ़र की देहलीज़ पर क़दम रखने के बा'द ज़िन्दगी का येह पहला मौक़अ़ था कि ऐसे क़ाबिले नफ़रत शख़्स को किसी ने इस क़दर मह़ब्बत से नवाज़ा था। उन पर इन्फ़िरादी कोशिश करने वाले उन के हम उ़म्र मुबल्लिग़ से उन्हों ने गुनाहों का फ़साना बयान किया तो इन्हों ने रह़मतों भरी बातों के ज़रीए़ कुछ इस अन्दाज़ में ढारस बंधाई कि उन दिल मुत़्मइन हो गया, कि नहीं नहीं मेरे लिये **तौबा** का दरवाज़ा बन्द नहीं हुवा है, **अल्लाह** पाक बख़्शने वाला मेहरबान है चुनान्चे उन्हों ने अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों से **तौबा** कर ली। उन की ज़िन्दगी का पहला दिन था कि जिस में उन्हों ने पहली बार पांचों नमाज़ें अदा कीं। फिर जब सालाना इम्तिह़ान के बा'द छुट्टियां हुईं तो उन का येह मा'मूल बन गया कि उस आ़शिक़े रसूल के साथ सुब्ह़ मस्जिद में जाते तो तक़रीबन बारह बजे तक मसाइले नमाज़ और सुन्नतें सीखने सिखाने का सिल्सिला जारी रहता।

कुछ अ़र्से बा'द शैत़ान ने एक चाल चली और कुछ ऐसे नादानों की सोह़बत मुयस्सर आई कि जिन्हों ने उन को उस मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी से बदज़न कर दिया आह ! वोह अपने उस मोह़सिन और ख़ैर ख़्वाह को अपना दुश्मन और बद ख़्वाह समझ बैठे और एक आ़शिक़े रसूल की ग़ीबतें सुनने के बाइ़स अच्छी सोह़बतें छोड़ कर तक़रीबन एक साल तक फिर बुरे लोगों की संगत में गरिफ़्तार रहा और इस दौरान फिर वोही "ह़रकतें" शुरूअ़ कर दीं। मगर सरकारे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ग़ुलामी मुक़द्दर में लिख दी गई थी, लिहाज़ा क़िस्मत ने एक बार फिर यावरी की, वोह यूं कि एक दिन वोह फ़ैक्टरी से छुट्टी कर के वापस आ रहे थे और ह़स्बे आ़दत परेशान नज़री का शिकार, बद निगाही की आफ़ते बद में गरिफ़्तार राह चलते लोगों से छेड़छाड़ करते जा रहा थे कि अचानक उन की नज़र सफ़ेद लिबास में मल्बूस, सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ का ताज सजाए, ह़या से अपनी निगाहों को झुकाए, अपनी त़रफ़ आते हुए एक आ़शिक़े रसूल पर पड़ी, उन के चेहरे पर तक़्वा का नूर देख कर उन्हें अपने गुनाहों पर नदामत सी होने लगी, उन से मुलाक़ात की, वोह निहायत गर्म जोशी से मिले, उन से तआ़रुफ़ हुवा और फिर रफ़्ता रफ़्ता येह उन की सोह़बत में रहने लगे, उन इस्लामी भाई की नमाज़ों में इस्तिक़ामत क़ाबिले रश्क थी। दा'वते इस्लामी के बारे में उन का हुस्ने ज़न अज़ सरे नौ क़ाइम हो गया, वोह इस्लामी भाई उन्हें सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में भी अपने हमराह ले गए, इज्तिमाअ़ से वापसी पर उन के सर पर सफ़ेद टोपी थी, बा'द में इ़मामा शरीफ़ भी सजा लिया और इस मदनी बहार को बयान करते वक़्त

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الکریم वोह दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में क़ाफ़िला कोर्स कर रहे हैं।

मो'तरिफ़ हूं गुनाह करने में कोई छोड़ी नहीं कसर आक़ा
फंस गया हूं गुनाह की दलदल में हो करम शाहे बहरो बर आक़ा
मैं गुनहगार हूं मगर क़ुरबां तेरी रहमत की है नज़र आक़ा

(वसाइले बख़्शिश, स. 350, 351)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! बार बार गुनाहों में पड़ने वाला बिल आख़िर दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल की बरकत से राहे रास्त पर आ ही गया। यक़ीनन सारे ही **गुनाह** क़ाबिले तर्क हैं, इन में किसी क़िस्म की भलाई नहीं। गुनाहों से बचने वालों की पज़ीराई और अपनी इबादतों की ता'रीफ़ से बचने की तल्क़ीन पर मब्नी क़ुरआनी "नेकी की दा'वत" मुलाहज़ा हो। चुनान्चे पारह 27 **सूरतुन्नज्म** आयत नम्बर 32 में इर्शाद होता है :

اَلَّذِیْنَ یَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓىٕرَ الْاِثْمِ وَ الْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَ اِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ فِیْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ فَلَا تُزَكُّوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ﴿۳۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो बड़े गुनाहों और बे हयाइयों से बचते हैं मगर इतना कि गुनाह के पास गए और रुक गए बेशक तुम्हारे रब की मग़्फ़िरत वसीअ है वोह तुम्हें ख़ूब जानता है तुम्हें मिट्टी से पैदा किया और

जब तुम अपनी मांओं के पेट में ह़म्ल थे तो आप अपनी जानों को सुथरा न बताओ। वोह ख़ूब जानता है जो परहेज़ गार हैं।

आयते मुबारका की तफ़्सीर

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : गुनाह वोह अ़मल है जिस का करने वाला अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ हो। बहर ह़ाल गुनाह की दो क़िस्में हैं सग़ीरा और कबीरा। **कबीरा** वोह जिस का अ़ज़ाब सख़्त हो और बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि **सग़ीरा** वोह जिस पर वईद न हो **कबीरा** वोह जिस पर वईद हो और **फ़वाह़िश** वोह जिन पर ह़द हो। आयते मुबारका के इस ह़िस्से "मगर इतना कि गुनाह के पास गए और रुक गए" के तह़्त फ़रमाते हैं : कि इतना तो कबाइर से बचने की बरकत से मुआ़फ़ हो जाता है। इस ह़िस्सए आयत : "बेशक तुम्हारे रब की मग़्फ़िरत वसीअ़ है वोह तुम्हें ख़ूब जानता है" के तह़्त फ़रमाते हैं : **शाने नुज़ूल :** येह आयत उन लोगों के ह़क़ में नाज़िल हुई जो नेकियां करते थे और अपने अ़मलों की ता'रीफ़ करते थे और कहते थे हमारी नमाज़ें, हमारे रोज़े, हमारे ह़ज। इस ह़िस्सए आयत "तो आप अपनी जानों को सुथरा न बताओ" के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी तफ़ाख़ुरन (बत़ौरे फ़ख़्र) अपनी नेकियों की ता'रीफ़ न करो क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला अपने बन्दों के ह़ालात का ख़ुद जानने वाला है। वोह इन की इब्तिदाए हस्ती से आख़िरे अय्याम (या'नी शुरूअ़ से ले कर मौत तक) के जुम्ला अह़वाल जानता है। इस आयत में **रिया** और **ख़ुद नुमाई** और **ख़ुद सराई** की मुमानअ़त फ़रमाई गई लेकिन अगर ने'मते इलाही के

ए'तिराफ़ और इताअ़त व इबादत पर मसर्रत और उस के अदाए शुक्र के लिये नेकियों का ज़िक्र किया जाए तो जाइज़ है। इस हिस्सए आयत, ''वोह ख़ूब जानता है जो परहेज़ गार हैं'' के तह़्त फ़रमाते हैं : और उसी का जानना काफ़ी, वोही जज़ा देने वाला है, दूसरों पर इज़्हार और नामो नुमूद से क्या फ़ाएदा ! (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान स. 973)

सब से प्यारे आ'माल

क़बीलए ख़स्अ़म का एक आदमी बारगाहे नुबुव्वत में ह़ाज़िर हुवा, कहने लगा : ''वोह आप ही हैं जो **अल्लाह** पाक का रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم होने का दा'वा रखते हैं ?'' फ़रमाया : ''हां।'' पूछा : **अल्लाह** पाक के यहां सब से ज़ियादा प्यारा अ़मल क्या है ? इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक पर **ईमान** लाना। अ़र्ज़ की : फिर कौन सा ? इर्शाद हुवा, सिलए रेह़्मी (या'नी रिश्तेदारों के साथ हुस्ने सुलूक) करना। अ़र्ज़ की, फिर कौन सा ? इर्शाद फ़रमाया : नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना। (مجمع الزوائد، 8/277، حدیث:13454، مسند ابی یعلیٰ، 6/55، حدیث:6804)

ऐ का'बा ! तेरी फ़ज़ा कितनी अच्छी है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बेशक अफ़्ज़ल व अहम तरीन अ़मल **ईमान** है और तमाम नेक आ'माल के उख़्रवी फ़वाइद भी **ईमान** पर ख़ातिमे के साथ ही मश्रूत़ हैं जैसा कि ''बुख़ारी शरीफ़'' में है : اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالْخَوَاتِيْم या'नी आ'माल का दारो मदार ख़ातिमे पर है। (بخاری، 4/274، حدیث:6607) यक़ीनन जो मुसल्मान है वोह बड़ा ही ख़ुश क़िस्मत है। **मुसल्मान** की फ़ज़ीलत के भी क्या कहने ! शहन्शाहे मदीना

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने का'बए मुअ़ज़्ज़मा को मुख़ातब कर के इर्शाद फ़रमाया : "तू ख़ुद और तेरी फ़ज़ा कितनी अच्छी है, तू किस क़दर अ़ज़मत वाला है और तेरी हुरमत (या'नी इ़ज़्ज़त) कैसी अ़ज़ीम है, उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मुह़म्मद की जान है ! **अल्लाह** पाक के नज़्दीक मोमिन की जान व माल और उस से अच्छा गुमान रखने की हुरमत तेरी हुरमत से भी ज़ियादा है।" (ابن ماجہ، 4/319، حدیث:3932) जो बद क़िस्मत ईमान की दौलत से मह़रूम है उस को आख़िरत में किसी क़िस्म की भलाई और राह़त नहीं मिलेगी वोह हमेशा हमेशा जहन्नम में अ़ज़ाब पाता रहेगा। जहन्नम की कैफ़िय्यत पढ़िये और लरज़िये चुनान्चे

जहन्नम की दिल हिला देने वाली कैफ़िय्यत

दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब, "जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल" जिल्द अव्वल (853 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 97 ता 98 पर है : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने ह़ज़रते का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ (मश्हूर ताबेई़ बुज़ुर्ग) से इर्शाद फ़रमाया : **ऐ का'ब** (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) ! हमें डर वाली कुछ बातें सुनाइये ! ह़ज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने ता'मीले इर्शाद करते हुए अ़र्ज़ की : या अमीरल मुअमिनीन ! अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ क़ियामत के दिन सत्तर अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام के आ'माल ले कर आएं तब भी मह़शर के अह़वाल देख कर उन्हें बहुत ही कम जानने लगेंगे। येह सुन कर **अमीरुल मुअमिनीन** رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने कुछ देर के लिये सर झुका लिया फिर जब (रिक़्क़त में) इफ़ाक़ा हुवा (या'नी कमी आई) तो इर्शाद फ़रमाया : **ऐ का'ब** (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) ! मज़ीद

सुनाइये। अ़र्ज़ की : **या अमीरल मुअमिनीन** ! अगर जहन्नम में से **बैल** के नथने (या'नी बैल की नाक के सूराख़) जितना हिस्सा मश्रिक़ में खोल दिया जाए तो मग़रिब में मौजूद शख़्स का दिमाग़ उस की गर्मी की वज्ह से उबल कर बह जाए। इस पर अमीरुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने (रिक़्क़त के सबब) कुछ देर के लिये सर झुका लिया फिर जब इफ़ाक़ा हुवा (या'नी कमी हुई) तो इर्शाद फ़रमाया : **ऐ का'ब** (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) ! और सुनाइये। अ़र्ज़ की : **या अमीरल मुअमिनीन** ! क़ियामत के दिन जहन्नम इस त़रह़ गरजेगी कि कोई मुक़र्रब फ़िरिश्ता या नबिय्ये मुरसल ऐसा न होगा जो घुटनों के बल गिर कर येह न कहे : رَبِّ! نَفْسِیْ! نَفْسِیْ (या'नी ऐ मेरे रब्बे करीम ! मैं तुझ से अपने लिये सुवाल करता हूं) ह़ज़रते का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने मज़ीद बताया : जब क़ियामत का दिन आएगा तो **अल्लाह** पाक अव्वलीन व आख़िरीन (या'नी सब अगलों पिछलों) को एक मैदान में जम्अ़ फ़रमाएगा, फिर फ़िरिश्ते नाज़िल हो कर सफ़ें बनाएंगे। इस के बा'द **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाएगा : ऐ जिब्राईल ! जहन्नम को ले आओ। तो ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام जहन्नम को इस त़रह़ ले कर आएंगे कि उस की सत्तर हज़ार लगामों को खींचा जा रहा होगा, फिर जब जहन्नम मख़्लूक़ से **सो बरस की राह** के फ़ासिले पर रह जाएगी तो इस ज़ोर से गरजेगी कि जिस से मख़्लूक़ के दिल दहल जाएंगे, फिर जब दोबारा गरजेगी तो हर मुक़र्रब फ़िरिश्ता और नबिय्ये मुरसल घुटनों के बल गिर जाएगा, फिर जब तीसरी मरतबा गरजेगी तो लोगों के दिल गले तक पहुंच जाएंगे और अ़क़्लें घबरा जाएंगी, यहां तक कि ह़ज़रते इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلَیْہِ السَّلَام

अ़र्ज़ करेंगे : या इलाही ! मैं तेरे ख़लील होने के सदक़े से सिर्फ़ अपने लिये सुवाल करता हूं। ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام अ़र्ज़ गुज़ार होंगे : **या इलाही** ! मैं अपनी मुनाजात के सदक़े सिर्फ़ अपने लिये सुवाल करता हूं। ह़ज़रते ईसा **रूहुल्लाह** عَلَيْهِ السَّلَام अ़र्ज़ करेंगे : **या इलाही** ! तू ने मुझे जो इ़ज़्ज़त दी है उस के सदक़े मैं सिर्फ़ अपने लिये सुवाल करता हूं, उस मरयम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के लिये (भी) सुवाल नहीं करता जिस ने मुझे जना है।

(اَلزَّواجِرُ عَنِ اقْتِرافِ الْكبائِر ج١ ص ٤٩)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत से जहन्नम की होल नाकियों का बख़ूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। इस रिवायत में अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के मक़ामे ख़ौफ़ का भी बयान है, मगर याद रहे कि येह ह़ज़रात मा'सूम हैं और रिवायत में बयान कर्दा सूरते ह़ाल क़ियामत के बा'ज़ अवक़ात में होगी वरना उन्हें मह़शर में किसी क़िस्म की कोई तक्लीफ़ न होगी बल्कि **अल्लाह** पाक की इ़नायत से लोगों की शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे और ख़ुद बुलन्द तरीन मक़ामात पर जल्वा फ़रमा होंगे।

मुझे नारे दोज़ख़ से डर लग रहा है   हो मुझ ना तुवां पर करम या इलाही
जला दे न मुझ को कहीं नारे दोज़ख़   करम बहरे शाहे उमम या इलाही
तू अ़त्तार को बे सबब बख़्श मौला   करम कर करम कर करम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 82, 83)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد